2

पञ्चमहाभूत

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने सृष्टि रचना के विषय में वैदिक मत को जाना। इस पाठ में आप पञ्चमहाभूतों के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त कर पायेंगे। सृष्टि की उत्पत्ति इन्हीं पञ्चमहाभूतों से हुई है। इस विषय में आप अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी या परिवार के किसी बड़े सदस्य से भी बातचीत कर सकतें हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश को पञ्चमहाभूत कहते है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- पञ्चमहाभूत को सतही तौर पर जान पाने में; और
- महाभूतों की सत्ता (अस्तित्व) का सामान्य ज्ञान कर पाने में।

2.1 पञ्चमहाभूत : अर्थ तथा प्रकृति

भू सत्तायाम् (भू धातु) में क्त प्रत्यय के योग से भूत शब्द बनता है। भूत का तात्पर्य है जिसकी सत्ता (अस्तित्व) हो या जो विद्यमान रहता हो। भूत किसी अन्य के कार्य नहीं होते अर्थात् इनकी उत्पत्ति का कोई कारण नहीं होता है बल्कि महाभूतों के उपादान कारण के रुप में अन्य सब की विद्यमानता रहती है।

महर्षि चरक के अनुसार ये महाभूत सूक्ष्म तथा इन्द्रियातीत होते है-

अर्थाः शब्दादयो ज्ञेया गोचरा

विषमा गुणाः

(चरक शास्त्र 1/32)

महान भूतों को महाभूत कहते है-

"महन्ति भूतानि महाभूतानि"

महत्व या स्थूलत्व आने के कारण इनकी महाभूत संज्ञा होती है। तथा ये समस्त जीवों का शरीर और निर्जीव सभी पदार्थ इन्हीं से बने है।

इह हि द्रवयं पञ्चमहाभूतात्मकम

महाभूत संख्या में पाँच है-

1. आकाश
2. वायु
3. अग्नि
4. जल
5. पृथ्वी

आकाश- आकाश को नित्य माना गया है। आकाश का एक गुण है-शब्द। जैसे आकाश नित्य है वैसे ही उसका गुण-"शब्द" भी नित्य है।

चित्र 2.1 आकाश

वायु– आकाश से वायु की उत्पत्ति मानी गई है। **"आकाशद्वायु:"** वायु भी नित्य माना गया है। वायु में अपना गुण स्पर्श तथा आकाश का गुण शब्द रहता है। इस तरह वायु के दो गुण – स्पर्श तथा शब्द नित्य होते हैं।

चित्र 2.2 वायु

अग्नि– अग्नि को तेज भी कहते हैं। अग्नि की उत्पत्ति वायु से मानी जाती है। अग्नि नित्य **"वायोराग्नि"** मानी गई है। अग्नि में शब्द, स्पर्श तथा रुप तीन

चित्र 2.3 अग्नि

गुण होते है। तीनों ही गुण नित्य होते है। इस तरह अग्नि के तीन गुण होते है।

आप- आप को जल कहते है। जल की उत्पत्ति आप से मानी जाती है - **"अग्रेराप:"**। आप नित्य मानी गई है।

जल में शब्द, स्पर्श, रुप तथा रस गुण होते है। सभी चारों गुण नित्य होते है।

चित्र 2.4 जल

पृथ्वी- जल से पृथ्वी की उत्पत्ति मानी जाती है। अदभय: पृथ्वी। शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध ये पाँच पृथ्वी के गुण होते है।

चित्र 2.5 पृथ्वी

उपरोक्त मूल नित्य गुणों के अलावा इस महाभूतों में कुछ अन्य विशेषताएं जिन्हें हम हमारी इन्द्रियों के माध्यम से महसूस कर सकते है जैसे-पृथ्वी, जल, तेज, वायु में क्रमशः हम गंधत्व, द्रवत्व,चसत्व आदि विशेषताओं को अनुमान कर सकते है। इसी तरह अप्रतिघात का अनुभव हम आकाश महाभूत में देख सकते है।

पञ्चमहाभूत	**गुण**
आकाश	शब्द
वायु	शब्द, स्पर्श
अग्नि (तेज)	शब्द, स्पर्श, रूप
आप (जल)	शब्द, स्पर्श, रूप, रस
पृथ्वी	शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध

सत्व, रजस, तमस गुणों का अन्तर्भाव पञ्चमहाभूतों में बताया गया है। जैसे-इनके गुणों की प्रकृति के अनुसार देखें तो आकाश में सत्व गुण की अधिकता, वायु में रजो गुण की, अग्नि में सत्व और रजो गुण की, आप (जल) में सत्व और तमोगुण की तथा पृथ्वी में तमोगुण की प्रधानता मानी जाती है।

पञ्चमहाभूत	**सत्व, रजस, तमस की प्रधानता**
आकाश	सत्व प्रधान
वायु	रजस प्रधान
अग्नि	सत्व+रजस प्रधान
आप	सत्व+तमस प्रधान
पृथ्वी	तमस प्रधान

समस्त सृष्टि का निर्माण इन्ही पञ्चमहाभूतों से हुआ है।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. "भू सत्तायाम्"- भू धातु में किस प्रत्यय के योग से भूत शब्द बना है?
2. महाभूत कितने होते है?
3. आकाश महाभूत नित्य है या अनित्य?
4. आकाश महाभूत का गुण क्या है?
5. वायु महाभूत की उत्पत्ति किस महाभूत से मानी जाती है।
6. वायु महाभूत के क्या गुण हैं?
7. अग्नि महाभूत के गुणों को लिखिए।
8. आप (जल) में कितने गुण होते है?
9. महाभूतों के गुण नित्य होते हैं या अनित्य।
10. पृथ्वी महाभूत के गुण लिखिए।

आपने क्या सीखा

- पञ्चमहाभूत - जल, अग्नि, वायु, आकाश और पृथ्वी।
- पञ्चमहाभूत और इनके गुण नित्य होते है।
- सृष्टि का निर्माण इन पञ्चमहाभूतों से ही हुआ है।

पाठांत प्रश्न

1. महाभूतों को नाम और उनके गुणों को लिखिए?
2. महाभूतों में सत्व, रजस, तथा तमस की प्रधानता को लिखिए।

उत्तरमाला

2.1

1. क्त प्रत्यय
2. पाँच
3. नित्य
4. शब्द गुण
5. आकाश
6. शब्द और स्पर्श
7. शब्द, स्पर्श और रूप
8. चार
9. नित्य
10. शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध